317hi02

2

राष्ट्र और राज्य

आधुनिक राष्ट्र और राज्य को राजनीतिक संगठन के रूप में बदलने में बहुत लम्बा समय लगा। प्राचीन समय में मानव समुदायों में रहता था। स्वभावत: मानव एक सामाजिक प्राणी है जो अकेला नहीं रह सकता। वह समाज का अभिन्न अंग होता है। अत: अपने जीवन में मानव को कुछ नियमों का पालन करना होता है और इस सामुदायिक जीवन से धीरे-धीरे राजनीतिक समुदायों और राज्यों की स्थापना होती है। अपने प्रारम्भिक रूप में 'राज्य' की संरचना सरल थी। उस सरल संरचना से राज्य अब गूढ़ संरचना में विकसित हो चुका है। कालान्तर में इसके रूप में बदलाव आता रहा है एवं यह एक सर्वव्यापी संस्था बन गयी है। इस अध्याय में आप राष्ट्र, राष्ट्रीयता और राज्य की संकल्पना का अध्ययन करेंगे। इसके अतिरिक्त आप राज्य के घटकों का भी अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- राष्ट्र और राष्ट्रीयता की संकल्पना का वर्णन कर सकेंगे;
- राष्ट्र और राष्ट्रीयता के बीच अंतर बता सकेंगे;
- राष्ट्रीयता के घटकों का वर्णन कर सकेंगे;
- राज्य को संप्रभुता सम्पन्न राजनीतिक संस्था के रूप में पहचान सकेंगे;
- राज्य के घटकों की व्याख्या कर सकेंगे।

2.1 राष्ट्र और राष्ट्रीयता

लैटिन शब्द 'नेट्स' से राष्ट्रीयता की उत्पत्ति हुई है, जिसका अर्थ है 'जन्म लेना'। अत: इन पदों में राष्ट्रीयता का अर्थ है किसी एक जाति विशेष में जन्म या रक्त संबंध के आधार पर संबंधित होना। वस्तुत: राष्ट्रीयता की यह समझ भ्रामक है। आज विश्व में कोई भी ऐसा 'राष्ट्र' नहीं है जिसके नागरिक एक ही वंश या कुल से संबंधित हों। सभी राष्ट्रों में भिन्न-भिन्न कुलों से संबंधित नागरिक रहते हैं। वंशानुगत शुद्धता बहुत कठिन है, क्योंकि यह अप्रवासियों, अंतर्जातीय तथा अंतर्कुलीय विवाहों के कारण अशुद्ध होती आ रही है। अत: निश्चित रूप से राष्ट्रीयता का विकास एक मनोवैज्ञानिक घटना है, न कि राजनीतिक या नस्ल आधारित।

जे.डब्लू गार्नर के शब्दों में, राष्ट्रीयता एक सांस्कृतिक रूप से समांगी समूह है जो कि इसकी एकता के बारे में भी सतर्क है।

रैमसे मूर के अनुसार, राष्ट्र को व्यक्तियों के एक समूह से निरूपित किया जा सकता है, जो आपस में स्वयं को कुछ सजातीय घनिष्ठताओं द्वारा अभिन्न महसूस करते हैं। ये घनिष्ठतायें इतनी शक्तिशाली हैं कि इन व्यक्तियों को आपस में बाँध कर रखती हैं तथा अन्य लोगों के अधीन होने या आपस में एकता खो देने पर असंतुष्ट हो जाती हैं। राष्ट्रीयता का विकास निश्चित रूप से एक मनोवैज्ञानिक घटना है, या जैसा कि **हायक** कहते हैं, वस्तुत: यह एकता के प्रति जागरूक एक सांस्कृतिक चेतना है।

2.2 राष्ट्र और राष्ट्रीयता में अंतर

राष्ट्र और राष्ट्रीयता में बहुत ही सूक्ष्म भेद है। ऐसा इसलिए है क्योंकि दोनों ही शब्दों की एक शब्द विशेष से उत्पत्ति हुई है। कुछ लोग इन शब्दों को परस्पर बदले जा सकने वाले शब्द कहते हैं। परंतु निश्चित रूप से दोनों शब्दों में अंतर हैं, जो कि निम्नलिखित हैं :

1. राष्ट्रीयता एक सांस्कतिक शब्द है। यह एक मनोवैज्ञानिक भाव है। जो कि एक भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाले लोगों में एक ही कुल, इतिहास, धर्म, रीति-रिवाज, आदि के कारण उत्पन्न होता है।

   एक राष्ट्रीयता के लोगों में एकता की भावना होनी चाहिए। उन्हें यह महसूस करना चाहिए कि उनमें कुछ समानता है, जो उन्हें दूसरे लोगों से अलग करती है। परंतु राष्ट्र लोगों का एक संगठित एवं व्यवस्थित समूह है। किसी राष्ट्र में व्यक्तियों को जो एक चीज जोड़ती है, वह एक होने की भावना है। अत: राष्ट्र से एक संगठन का विचार आता है तथा राष्ट्रीयता से भावात्मक।

2. मूल रूप से राष्ट्रीयता एक सांस्कृतिक पद है जो केवल 'राजनीतिक' है जैसा कि **हायक** हमें बताते हैं। राष्ट्र मूल रूप से एक राजनीतिक पद है जो कि संयोगवश सांस्कृतिक है। हालांकि इसका अर्थ यह नहीं है कि राष्ट्रीयता की राजनीतिक और राष्ट्र की सांस्कृतिक संकल्पना नहीं है।

3. राज्य के विकास से यह प्रदर्शित हो चुका है कि एक से अधिक राष्ट्रीयता वाले भी राज्य हो सकते हैं तथा एक ही राष्ट्रीयता कई राज्यों में भी पाई जा सकती है। पूर्व सोवियत संघ में जब वह एक राज्य था कई राष्ट्रीयताएं समाहित थीं; दूसरे उदाहरणार्थ कोरियन राष्ट्रीयता जो दो से अधिक राज्यों में विद्यमान है। अत: राज्य और राष्ट्रीयता एक ही साथ पाये भी जा सकते हैं और नहीं भी।

4. दूसरे अर्थ में, राष्ट्र और राष्ट्रीयता दो अलग-अलग शब्द हैं। कुछ लोग 'राष्ट्रीयता' शब्द को मानते हैं कि यह राष्ट्र के निर्माण का आधारभूत तथ्य अथवा गुण है अर्थात राष्ट्र से पहले राष्ट्रीयता का स्थान है। इसलिए मूल उत्पत्ति के अनुसार ये दोनों एक जैसे नहीं हैं। यहूदी राष्ट्रीयता ने यहूदी राष्ट्र का निर्माण किया।

5. यदि हम 'राष्ट्र' शब्द का प्रयोग एक ही कुल, भाषा और रीति-रिवाज, तथा एक ही क्षेत्र की जनसंख्या के सबसे अधिक लोगों के लिए करते हैं, तो वास्तव में हम देखते हैं कि ब्रिटिश लोग भी एक राष्ट्र हैं। दूसरी ओर, यदि हम 'राष्ट्रीयता' शब्द का प्रयोग किसी क्षेत्र के छोटे-छोटे विभिन्न मानव समुदायों के लिए करते हैं जो कि उस क्षेत्र की जनसंख्या का छोटा सा भाग हैं, तो हम देखते हैं कि वेल्श एक राष्ट्रीयता है तथा यह ब्रिटिश राष्ट्र का एक अंग है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 2.1

रिक्त स्थान भरिए

(क) व्युत्पत्ति के अनुसार, राष्ट्रीयता का अर्थ है, ... जाति विशेष से संबंधित होना।

(ख) अप्रवास, अंतर्जातीय और अंतर्कुलीय विवाहों के कारण..........................की पहचान कठिन है।

(ग) राष्ट्रीयता का विकास निश्चित रूप से एक..घटना है।

(घ) राष्ट्रीयता की व्युत्पत्ति लैटिन शब्द...........................से हुई है।

2.3 राष्ट्रीयता के तत्व या घटक

राष्ट्रीयता को इसके घटक पदों में परिभाषित करना अत्यंत कठिन है। यह एक मनोवैज्ञानिक संकल्पना है अथवा व्यक्तिगत विचार। अत: यह असंभव है कि कोई ऐसा समान गुण अथवा निश्चित रूचि हो सकती है जो राष्ट्रीयता में सभी जगहों पर समान हो। अत: हम निश्चित रूप से नहीं कह सकते हैं कि यह विशेष घटक एक अलग राष्ट्रीयता समान है। इस प्रयास में हम यहाँ कुछ घटकों को सूचीबद्ध कर सकते हैं जो कि निम्नलिखित हैं:-

2.3.1 समान भौगोलिक क्षेत्र

एक ही क्षेत्र में रहने वाले लोग राष्ट्रीयता के एक बड़े घटक का निर्माण करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि ये लोग संभवत: एक जैसी संस्कृति का विकास करेंगे। यही कारण है कि देशों को मातृभूमि या पितृभूमि की तरह देखते हैं। हम लोगों की देश के साथ पहचान भी देखते हैं। अत: डेनमार्क के लोगों को डेन, फ्रांस के लोगों को फ्रांसिसि, भारतीयों को भारतीय, अमेरिकावासियों को अमरीकी आदि कहते हैं। एक ही क्षेत्र का होना राष्ट्रीयता का एक आवश्यक घटक नहीं है। इस्राइल के निर्माण से पहले यहूदी संपूर्ण विश्व में बिखरे हुए थे। एक ही राज्य क्षेत्र के न होने के बावजूद भी वे एक शक्तिशाली राष्ट्रीयता थे। इसी प्रकार, पोल्स लोगों का 1919 से पहले कोई एक राज्य-क्षेत्र नहीं था, परंतु वे एक राष्ट्रीयता थे।

2.3.2 समान कुल

कुलीय समानता का विचार यह दर्शाता है कि किसी राष्ट्रीयता विशेष से संबंधित लोग एक समूह अथवा सामाजिक एकता से संबंधित होते हैं। कुछ लोग यह सुझाव देते हैं कि कुलीय शुद्धता से ही राष्ट्र बनता है। वैज्ञानिक तौर पर यह गलत है। उपरोक्त अध्ययनानुसार, अप्रवास, अंतर्जातीय विवाहों आदि के कारण कुलीय शुद्धता लगभग असंभव है। आज यह मिथक बन गया है। परंतु यह विश्वास कि लोग एक वास्तविक या काल्पनिक कुल से संबंधित हैं, इससे राष्ट्रीयता के विचार में योगदान मिला है। कुलीय समरूपता इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे, समान भाषा, रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक समरूपता को बल मिलता है।

2.3.3 समान भाषा

समान भाषा विचार व्यक्त करने का साधन है जिसके माध्यम से लोग अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं। यह राष्ट्रीयता के अन्य घटकों का आधार है। एक जैसी भाषा न केवल एक जैसे साहित्य का होना दर्शाती है वरन् एक जैसी ऐतिहासिक विरासत को भी दर्शाती है। समान ऐतिहासिक अनुभव और समान परंपराएं जो कि साहित्य में झलकती हैं ये सब एक ही राष्ट्रीयता के लोगों को एकसूत्र में बांधती हैं। एक जैसी

भाषा एक समरस समाज का निर्माण करती है। अधिकतम यूरोपीय राष्ट्रों का विकास समान भाषा के कारण ही हुआ है। जैसे कि इंग्लैण्ड का अंग्रेजी भाषा से, फ्रांस का फ्रैंच से और स्पेन का विकास स्पेनिश भाषा से हुआ है। परंतु यह आवश्यक नहीं है। आज हम कितनी ही द्विभाषीय और बहुभाषीय राष्ट्रीयताओं के बारे में जानते हैं तथा अंग्रेजी एक विश्वव्यापी भाषा है जिसे संसार के सभी भागों में बोला जाता है और इसे केवल इंग्लैंड से ही नहीं जोड़ा जा सकता।

2.3.4 समान धर्म

धर्म भी राष्ट्रीयता का एक महत्त्वपूर्ण घटक है। समान धर्म से राष्ट्रीय भावना मजबूत होती है। इंग्लैण्ड ने प्रोटैस्टैन्ट (इसाई धर्म के प्रोटैस्टैन्ट चर्च के अनुयायी) की रक्षा के लिए स्पेन के जहाजी बेड़ों का मुकाबला किया। परंतु यह भी एक आवश्यक घटक नहीं है। दरअसल आधुनिक समय में, राष्ट्रीयताएं बहुधर्मी बन गई हैं तथा इन परिस्थितियों में धर्म एक व्यक्तिगत मामला बन जाता है और आम जीवन में धर्म निरपेक्षता आ जाती है। धर्म हमेशा जोड़ने वाला घटक ही नहीं होता है। समान धर्म के होते हुए भी पाकिस्तान दो टुकड़ों में बंट गया एवं बंग्लादेश का निर्माण हुआ। भारत विभाजन के कारण जब पाकिस्तान का निर्माण हुआ तब धर्म ने भारतीय उपमहाद्वीप में विभाजक घटक के रूप में नकारात्मक कार्य ही किया।

2.3.5 समान राजनीतिक व्यवस्था

किसी राज्य में समान राजनीतिक ढाँचे का होना भी चाहे वह वर्तमान में हो या भूत में राष्ट्रीयता का एक घटक है। एक राज्य में लोग कानून के द्वारा एकसूत्र में बँधे होते हैं। एक ही राज्य में इस प्रकार रहने से एकता की भावना उत्पन्न होती है। विभिन्न संकट की घड़ियों में जैसे कि युद्ध के समय देशभक्ति की भावना का विकास होता है। वास्तव में सरकार विभिन्न तरीकों द्वारा इसे प्रोत्साहित करती है। **गिलक्रिस्ट** ठीक ही कहते हैं, ''राष्ट्रीयता या तो इसलिए अस्तित्व में है क्योंकि यह एक राष्ट्र है जिसमें इसका राज्य या क्षेत्र निहित है, या इसलिए क्योंकि यह अपने राज्य या क्षेत्र के साथ राष्ट्र बनने की इच्छा रखती है''

2.3.6 आर्थिक कारक

आर्थिक कार्यकलाप लोगों को एक दूसरे के समीप लाते हैं। यह तर्क दिया जाता है कि ऐतिहासिक रूप से विभिन्न जनजातियों और कुलों के मिश्रण के परिणामस्वरूप ही राष्ट्रीयता उभरती है। आदि समाज में राष्ट्रीयता के बारे में कोई सोच भी नहीं सकता। मार्क्सवादियों का भी यही विश्वास है कि राष्ट्रीयता आर्थिक कारक के कारण ही उभरती है। उनके अनुसार किसी दास युग या सामंती समाज के लिए राष्ट्रीयता का कोई महत्व नहीं था तथा राष्ट्रीयता केवल उत्पादन के पूंजीवादी तरीके के बाद ही अस्तित्व में आयी। नि:संदेह आर्थिक घटक राष्ट्रीयता का एक महत्त्वपूर्ण कारक है। यह राष्ट्रीयता को सहेज कर रखने का भी एक महत्वपूर्ण कारक है। परंतु यह अकेले ही राष्ट्रीयता का निर्माण नहीं कर सकता।

2.3.7 एकसमान अधिनस्तता

अफ्रीकी-एशियाई देशों में राष्ट्रीय आंदोलनों को उभरने में समान अधिनस्ता एक महत्त्वपूर्ण कारक रहा है। विभिन्न यूरोपीय साम्राज्यों ने उन पर आक्रमण किया। इस एकसमान अधिनस्तता के कारण उनमें राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न हुई क्योंकि इसने लोगों में एक होने की भावना जागृत की। भारत में समान औपनिवेशिक शोषण के कारण समान भारतीय राष्ट्रीयता का उदय हुआ।

2.3.8 एकसमान राजनीतिक अभिलाषाएं

कुछ लोग एक राष्ट्र होने की भावना को राष्ट्रीयता का मुख्य घटक मानते हैं। प्रथम विश्व युद्ध से पहले

पोल्स नागरिक पोलैण्ड को चाहते थे। इसी प्रकार यूरोप में रहने वाले कुछ अन्य अल्पसंख्यक भी अलग राष्ट्रीयता के इच्छुक थे। 1919 की पेरिस शांति वार्ता में आत्म-निर्णय के सिद्धांत को स्वीकार किया गया। सभी घटक हालांकि राष्ट्रीयता के विकास में योगदान करते हैं, परंतु उनमें से कोई भी पूर्णतया आवश्यक नहीं है। वास्तव में राष्ट्रीयता एक व्यक्तिगत भावना है जिसे किसी वस्तुनिष्ठ घटक के रूप में परिभाषित नहीं किया जा सकता। इनमें से किसी एक या अधिक घटक का होना या न होना यह नहीं दर्शाता है कि राष्ट्रीयता की भावना है या नहीं।

पाठगत प्रश्न 2.2

रिक्त स्थान भरिए

(क) एक ही क्षेत्र में रहने वाले लोग संभवत: एक जैसी......................का विकास करेंगे।

(ख) नस्ल की शुद्धता .... तौर पर गलत है।

(ग) अधिकाँश यूरोपीय राष्ट्र का विकास एक समान ....के कारण हुआ।

(घ) एक समान नियंत्रण से ....भावना को बल मिलता है।

(ङ) ऐतिहासिक रूप से विभिन्न जनजातियों और कुलों के.......................................से राष्ट्रीयता उभरती है।

(च) भारत में भारतीय राष्ट्रीयता की भावना एक समान .... से उत्पन्न हुई।

2.4 राज्य

राजनीति विज्ञान के अध्ययन का केन्द्र बिन्दु राज्य है। परंतु इसे गलत तरीके से राष्ट्र, समाज और सरकार के पयार्यवाची की तरह प्रयोग किया जाता है। 'राज्य' शब्द का प्रयोग राज्य प्रबंधन तथा राजकीय सहायता आदि के लिए भी किया जाता है। जैसे कि भारतीय संघ के राज्य या अमेरिका को बनाने वाले 50 राज्य। परंतु राजनीति विज्ञान में हम इस शब्द का प्रयोग अलग प्रकार से करते हैं। इसका एक विशेष अर्थ होता है। राज्य की संकल्पना की कुछ परिभाषाऐं निम्नलिखित हैं:

''राज्य एक निश्चित भूभाग में रहने वाले राजनीतिक तौर पर संगठित लोगों का समुदाय है।''

–ब्लंशली

''राज्य एक ऐसे लोगों का समुदाय है, जो साधारणतया बड़ी संख्या में हों, जिसका एक निश्चित भू-भाग पर स्थायी अधिकार हो, जो बाहरी नियंत्रण से स्वतंत्र या लगभग स्वतंत्र हो और जिसकी आज्ञाओं का पालन अधिकांश जनता स्वभाव से करती हो।''

–गार्नर

राज्य एक ''ऐसा क्षेत्रीय समाज है जो सरकारों तथा प्रजाओं में विभाजित है, चाहे वे व्यक्तिगत हों या उनके समूह तथा जिनके संबंधों को एक दमनकारी शक्ति के प्रयोग से मजबूत किया जाता है।''

–लास्की

''राज्य एक निश्चित भू-भाग में कानून द्वारा संगठित लोगों का समुदाय है।''

–वुड्रो विल्सन

टिप्पणी

राज्य ''राजनीति विज्ञान की एक संकल्पना है, एवम् एक नैतिक वास्तविकता है जो सरकार के अंतर्गत एक निश्चित भू-भाग पर निवास करने वाले चन्द लोगों में निवास करती है। यह आंतरिक मामलों में लोगों की सम्प्रभुता व्यक्त करने वाला अंग है तथा वाहृय मामलों में अन्य सरकारों से स्वतंत्र है।'' **–*गिलक्रिस्ट***

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और अकेला नहीं रह सकता। जब लोग एक साथ रहते हैं तो अपनी सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। परंतु प्रत्येक व्यक्ति अच्छा और दयालु नहीं होता। सभी प्रकार के पुरुष और महिलाएं होती हैं जो गर्व, द्वेष, लालच और स्वार्थ की भावनाओं को दर्शाते हैं। **बर्क** के अनुसार, ''कुत्सित समाज में केवल व्यक्ति विशेष के विभिन्न मनोभावों को ही नहीं वरन् सभी के भावों को एक नियंत्रण में रखने का प्रयत्न करना चाहिए। लोगों के विचारों को नियंत्रण में लाने का सबसे अच्छा तरीका राजनीतिक सत्ता है। इस प्रकार लोग एक सामान्य व्यवहार के नियमों में बंध जाते हैं। यदि इन नियमों का उल्लघंन किया गया तो उन्हें सजा मिल सकती है। समाज लोगों के साहचर्य की आवश्यकता को पूरा करता है और राज्य इस आवश्यकता से उत्पन्न समस्याओं को हल करने में।''

राज्य का अस्तित्व अच्छे जीवन के लिए है। यह एक प्राकृतिक और आवश्यक संस्था है जैसा कि **अरस्तू** ने कहा है- ''राज्य का उदय जीवन की मूल आवश्यकताओं से होता है तथा यह अच्छे जीवन के लिए निरंतर अस्तित्व में रहता है।''

केवल राज्य के कारण ही कोई व्यक्ति सक्षमता के स्तर तक ऊपर उठ सकता है। यदि कोई सत्ता, संगठन या नियम न हों, तो समाज एक साथ नहीं रह सकता। राज्य भी वहीं अस्तित्व में आता है जहां लोग एक संगठित समाज में रहते हैं। कालान्तर में राज्य ने धीरे-धीरे सरल संस्था से अब एक जटिल संगठन का रूप धारण कर लिया है जैसा कि आज-कल दृष्टिगोचर है।

राज्य का सार उसके दमनकारी शक्ति के एकाधिकार में है। यह लोगों से आज्ञा पालन कराने का अधिकार रखता है।

परंतु मार्क्सवादियों के अनुसार राज्य एक वर्ग संगठन है जिसकी रचना संपत्तिशाली वर्ग ने गरीबों को सताने और उनके शोषण के लिए किया है। वे राज्य को एक प्राकृतिक संस्था नहीं मानते। उनके अनुसार, संपत्तिशाली वर्ग ने राज्य की रचना की है और वे ही राज्य के स्वामी हैं। अत: राज्य शोषण का साधन मात्र है। वे एक वर्गविहीन या साम्यवादी समाज की परिकल्पना करते हैं जिसमें राज्य का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा।

पाठगत प्रश्न 2.3

रिक्त स्थान भरिए

(क) राज्य का अस्तित्व..................जीवन के लिए है।

(ख) राज्य का सार इसकी..............के एकाधिकार में निहित है।

(ग) राज्य लोगों से.........................का अधिकार रखता है।

(घ) मार्क्सवादियों के अनुसार राज्य........................है।

(ङ) किसी वर्गहीन समाज में...................नहीं होता।

2.5 राज्य के घटक

जैसा कि ऊपर दर्शाया गया है, राज्य के चार मूल घटक हैं। ये हैं:-

2.5.1 जनसंख्या

राज्य एक मानव संस्था है। लोग ही राज्य का निर्माण करते हैं। अंटार्कटिका एक राज्य नहीं है क्योंकि यहां मानव जनसंख्या नहीं हैं। जनसंख्या इस योग्य होनी चाहिए कि राज्य को वह चला सके। परंतु प्रश्न यह है कि जनसंख्या कितनी होनी चाहिए?

प्लेटो और **अरस्तु** के आदर्श दो यूनानी शहर - एथेंस और स्पार्टा थे। **प्लेटो** ने एक आदर्श राज्य की जनसंख्या 5040 निर्धारित की। **अरस्तु** ने एक सामान्य विचार बताया कि किसी राज्य को न तो अधिक छोटा होना चाहिए न ही बहुत बड़ा; यह इतना बड़ा हो कि स्व:पोषित हो और इतना छोटा हो कि आसानी से शासित हो सके। **रूसो** ने यह संख्या 10,000 बताई। परंतु किसी राज्य में जनसंख्या का निर्धारण एक कठिन कार्य है। आधुनिक समय में भारत और चीन की जनसंख्याएँ अत्यंत विशाल हैं तथा सैन मरीनो जैसे देशों की बहुत कम। पूर्व सोवियत संघ जैसे देशों ने बड़े परिवार की माताओं को प्रोत्साहन दिया। भारत में बढ़ती जनसंख्या एक बड़ी समस्या है, जबकि चीन ने केवल एक बच्चा होने के मापदंड को अपनाया है। **मुसोलिनी** जैसे तानाशाहों ने बड़ी जनसंख्या वाले राज्य को खुलकर प्रोत्साहन दिया।

अत: जनसंख्या पर कोई भी सैद्धांतिक या व्यावहारिक सीमा नहीं लगाई जा सकती। परंतु यह इतनी अवश्य होनी चाहिए कि इसमें शासक और शासित वर्ग हों, जो कि राजनीतिक संस्था को सहयोग दे सकें। जनसंख्या उपलब्ध भूमि और संसाधनों के समानुपाती होनी चाहिए। यह ध्यान में रहे कि जनसंख्या के अंतरों तथा अन्य साधनों के उतना ही रहने से राज्य के स्वरूप में कोई अंतर नहीं पड़ता।

जनसंख्या की गुणवत्ता भी महत्त्वपूर्ण है। एक अच्छे राज्य के नागरिक स्वस्थ, बुद्धिमान और अनुशासित होने चाहिए। उनमें तेजस्विता के गुण होने चाहिए। जनसंख्या की संरचना भी महत्वपूर्ण है। एक समान जनसंख्या वाले राज्य आसानी से शासित किये जा सकते हैं।

2.5.2 भू-भाग

जैसे प्रत्येक व्यक्ति राज्य से जुड़ा होता है वैसे ही प्रत्येक वर्ग गज जमीन भी। कोई भी राज्य बिना किसी निश्चित भू-भाग के नहीं होता। किसी क्षेत्र में एक साथ मिलकर रहना लोगों को बाँधता है। इस राज्य क्षेत्र के लिए प्रेम की भावना देशभक्ति उत्पन्न करती है। कुछ लोग इसे मातृभूमि और कुछ इसे पितृभूमि कहते हैं। परंतु अपने राज्य-क्षेत्र से सभी का एक निश्चित लगाव होता है।

भू-भाग को निश्चित होना चाहिए जिससे कि राजनीतिक सत्ता को अपना अधिकार क्षेत्र मिलता है। कबीलों में राजनीतिक सत्ता दिखती थी परंतु निश्चित भूमि न होने के कारण वे एक राज्य का निर्माण नहीं कर सके। यहूदी भी विभिन्न देशों में रह रहे थे और इस्राइल के निर्माण के बाद ही वे एक राज्य बनें जिसका एक निर्धारित भू-भाग है। निश्चित भू-भाग के बिना बाह्य मामलों का संचालन कठिन हो जाएगा। राज्य क्षेत्र यह पहचान करने के लिए आवश्यक है कि कौन-सा राज्य दूसरी राज्य की सीमा में घुसने का प्रयास कर रहा है।

भू-भाग छोटा भी हो सकता है और बड़ा भी। परंतु इसकी एक निश्चित भूमि होती है। यह 62 वर्ग किमी क्षेत्र वाले देश सैन मरीनों के जितना छोटा भी हो सकता है और भारत, अमेरिका, रूस और चीन के जितना बड़ा भी। राज्य का आकार उसकी सरकार को भी प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, छोटे राज्यों में एकात्मक सरकार होती है और भारत तथा अमेरिका जैसे बड़े देशों में संघीय सरकार होना अधिक उचित है। भूमि की गुणवत्ता भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। यदि भूमि खनिजों तथा प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर है तो यह राज्य को आर्थिक रूप से शक्तिशाली बनायेगी। यह इस योग्य होनी चाहिए कि लोगों को पर्याप्त भोजन

उपलब्ध हो सके। पश्चिमी एशिया के राज्य महत्वहीन थे परंतु तेल की खोज के बाद वे प्रसिद्ध हो गए। किसी राज्य का राज्य क्षेत्र बड़ा होने से उसे युद्ध के समय में युद्ध-नीति और सैन्य-संचालन में लाभ मिलता है। बांग्लादेश के निर्माण से पहले पाकिस्तान के दो क्षेत्र बहुत दूर थे। हवाई और अलास्का-अमेरिका के क्षेत्र प्रमुख राज्य क्षेत्र से बहुत दूर हैं।

भूमि, जल और वायु किसी राज्य के राज्य-क्षेत्र का निर्माण करते हैं। राज्य की संप्रभुता, पृथ्वी, नदियों, पहाड़ों और मैदानों तथा वायु क्षेत्र के ऊपर होती है। एक निश्चित सीमा तक समुद्र भी राज्य के राज्य-क्षेत्र का हिस्सा है।

2.5.3 सरकार

वह उद्देश्य जिसके लिए लोग एक साथ रहते हैं उसका अनुभव तब तक नहीं किया जा सकता जब तक कि वे ठीक प्रकार संगठित न हों तथा निश्चित आचार-विचार का पालन न करते हों। वह संस्था जो इन नियमों और आचार-विचारों को लागू करके उनका पालन निश्चित करती है, सरकार कहलाती है। किसी निश्चित राज्य-क्षेत्र में रहने वाले लोगों के सामान्य उद्देश्य का केन्द्र-बिन्दु भी सरकार है। इसी माध्यम के द्वारा सामान्य नीतियों का निर्धारण किया जाता है और सामान्य रुचियों को बढ़ावा दिया जाता है। सरकार के बिना लोगों में संशक्ति और सामूहिक कार्य की भावना नहीं आएगी। सरकार की अनुपस्थिति में गुटों और दलों के बीच युद्ध एवं अराजकता की स्थिति होगी। अतः एक सामान्य सत्ता की आवश्यकता होती है जहां पर लोग व्यवस्थित रह सकें। यह मनुष्य जीवन की पूर्वशर्त है। सरकार के बिना राज्य न तो हो सकता है और न ही होता है। चाहे सरकार किसी भी रूप में हो। सरकार का होना एक नितांत आवश्यकता है। यह एक राजतंत्र भी हो सकता है जैसे कि ब्रिटेन में और एक गणतंत्र भी जैसे कि भारत में। भारत एवं ब्रिटेन की तरह इसकी सरकार का संसदीय रूप भी हो सकता है और अमेरिका की तरह सरकार का एक अध्यक्षीय रूप भी हो सकता है।

2.5.4 प्रभुसत्ता

राज्य-क्षेत्र के किसी निश्चित भाग में रहने वाले वे लोग जिनकी अपनी सरकार हो, राज्य नहीं बनाते जब तक कि उनके पास संप्रभुता न हो। 15 अगस्त 1947 से पहले भारत के पास संप्रभुता के अलावा राज्य के सभी घटक थे, और इसलिए यह एक राज्य नहीं था। प्रभुसत्ता वह शक्ति है जिसके द्वारा राज्य उसके अंदर रहने वाले लोगों से राजनीतिक आज्ञा पालन की अपेक्षा करता है। राज्य को आतंरिक रूप से सर्वशक्तिमान या वाह्य नियंत्रण से मुक्त होना चाहिए। अतः प्रभुसत्ता के दो पहलू हैं, आतंरिक और बाह्य। आतंरिक प्रभुसत्ता राज्य की सीमाओं के अंदर राज्य का एकाधिकार है। यह सत्ता किसी अन्य राज्य के साथ बाँटी नहीं जा सकती। राज्य स्वतंत्र होता है और किसी बाहरी सत्ता की इच्छाओं से अप्रभावित रहता है।

अतः प्रत्येक राज्य की एक जनसंख्या, भू-भाग, **सुगठित** सरकार और प्रभुसत्ता होती है। इनमें से किसी भी एक घटक की अनुपस्थिति इसके राज्य के दर्जे से इसे वंचित करती है। अतः भारतीय गणतंत्र के 28 राज्यों या अमेरिका के 50 राज्यों के लिए इस शब्द का प्रयोग भ्रामक है। ये प्रशासनिक इकाईयाँ हैं।

पाठगत प्रश्न 2.4

रिक्त स्थान भरिए

(क) राज्य के चार घटक ...., ..., ... और ....हैं।

(ख) **प्लेटो** ने किसी राज्य की जनसंख्या ....निर्धारित की और **रूसो** ने ....।

(ग) देश के लिए प्रेम ....की भावना जागृत करता है।

(घ) ...., ... और ....से राज्य का भूभाग बनता है।

(ङ) सरकार का एकात्मक रूप छोटे राज्यों के लिए अच्छा है और ...., ...बड़े राज्यों के लिए आदर्श है।

(च) वह संस्था जो नियमों और आचार-विचारों को लागू करती है ....है।

(छ) प्रभुसत्ता के दो पहलू .... और .... हैं।

आपने क्या सीखा

आप राष्ट्र, राष्ट्रीयता और राज्य का अर्थ समझ चुके हैं। आप जानते हैं कि राष्ट्र और राष्ट्रीयता लैटिन शब्द नेट्स की व्युत्पत्ति हैं और इस व्युत्पत्ति में राष्ट्रीयता का अर्थ है किसी एक ही नस्ल से या जन्म और रक्त संबंधों द्वारा जुड़ा होना। अब आप राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता में अंतर समझ गए हैं। अब आप जानते हैं कि राष्ट्रीयता के कई घटक हैं परंतु कोई भी घटक या घटकों का संयोग अपरिहार्य नहीं है। इनमें से किसी एक या कई घटकों की उपस्थिति या अनुपस्थिति से राष्ट्रीयता की उपस्थिति या अनुपस्थिति निर्धारित नहीं होती। आप यह भी जानते हैं कि राज्य एक राजनीतिक संगठन है। यह समाज में व्यवस्था कायम करता है। परंतु मार्क्सवादियों के अनुसार राज्य एक वर्ग संगठन है। आप राज्य के चार घटकों के बारे में भी समझ चुके है- जनसंख्या, भू-भाग, सरकार और प्रभुसत्ता।

पाठांत प्रश्न

निम्नलिखित को परिभाषित कीजिए

1. (क) राष्ट्र (ख) राज्य (ग) सरकार
2. इन घटकों के नाम लिखिए जो राष्ट्रीयता के निर्माण में सहायक हैं, तथा उनमें से किन्हीं दो घटकों की व्याख्या कीजिए?
3. राज्य किसे कहते हैं? संक्षेप में राज्य के घटकों का उल्लेख कीजिए।.
4. क्या निम्नलिखित राज्य हैं? एक पंक्ति लिखकर अपने उत्तर की पुष्टि करें।

   (क) भारत (ख) संयुक्त राष्ट्र

   (ग) बिहार (घ) संयुक्त अमेरिका

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1

(क) किसी एक

(ख) शुद्ध कुल

(ग) मनोवैज्ञानिक

(घ) नेट्स

टिप्पणी

2.2

(क) संस्कृति

(ख) वैज्ञानिक

(ग) भाषा

(घ) एकता

(ङ) मिश्रण

(च) औपनिवेशिक शोषण

2.3

(क) अच्छे

(ख) दमनकारी

(ग) आज्ञा पालन

(घ) वर्ग संगठन

(ङ) राज्य

2.4

(क) भूभाग, जनसंख्या, सरकार, प्रभुसत्ता

(ख) 5040, 10000

(ग) देशभक्ति

(घ) भूमि, जल, वायु क्षेत्र

(ङ) संघीय रूप

(च) सरकार

(छ) आंतरिक, बाह्य

पाठांत प्रश्नों के लिए संकेत

1. (a) खण्ड 2.1 देखें
   (b) खण्ड 2.4 देखें
   (c) खण्ड 2.53 देखें
2. खण्ड 2.3 देखें
3 खण्ड 2.4 देखें
4. (a) हाँ, क्योंकि इसमें राज्य होने के चारों घटक हैं।
   (b) नहीं, क्योंकि इसमें राज्य-क्षेत्र और प्रभुसत्ता के घटक नहीं है।
   (c) नहीं, क्योंकि इसमें प्रभुसत्ता नहीं है।
   (d) हाँ, क्योंकि उसमें राज्य होने के चारों घटक हैं।